ISSN 2454-2725

Vol.1, issue.5, July 2015

वर्ष: 1, अंक 5, जुलाई 2015

जनकृति

(विमर्श केंद्रित अंतरराष्ट्रीय मासिक ई पत्रिका)

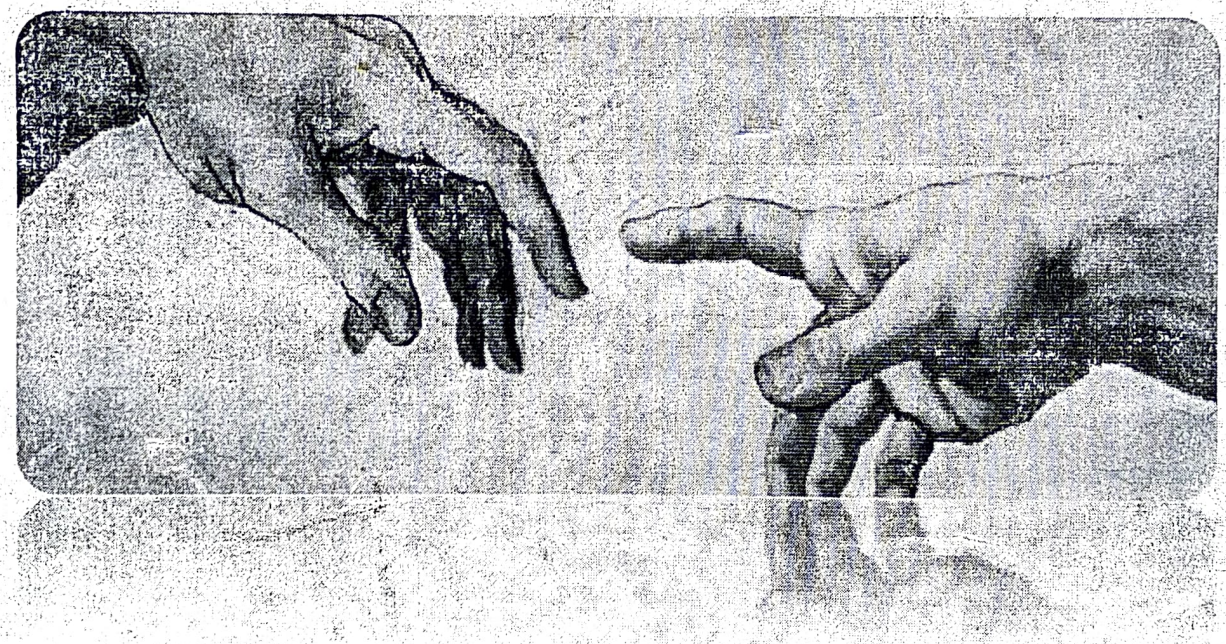

संपादक

कुमार गौरव मिश्रा

सामाजिकता, जीवन-मूल्य और कविता

[संदर्भ : कुँवर नारायण की कविता]

-संजय राय

व्यक्ति समाज की इकाई है और समाज व्यक्तियों का समूह। एक में समाज के संदर्भ में व्यक्ति की बात है, तो दूसरे में व्यक्ति के संदर्भ में समाज की। एक में इकाई प्रधान है तो दूसरे में समूह। एक में व्यक्ति प्रधान है तो दूसरे में समाज। हम किसी एक को महत्वपूर्ण मानकर और दूसरे को अनदेखा कर नहीं चल सकते क्योंकि दोनों के बीच द्वंद्वात्मक संबंध भी है और दोनों अन्योन्याश्रित भी हैं। न व्यक्ति के बिना समाज बन सकता है, न समाज के बिना व्यक्ति कोई अर्थ पा सकता है। दोनों की उदार टकराहट और सहयोग से ही स्वस्थ और विकासशील परिवेश का निर्माण होता है। इधर के दिनों में समाज को महत्वपूर्ण मानकर व्यक्ति को अनदेखा किया जाता रहा है। यही नहीं व्यक्ति को समाज के प्रतिपक्ष के रूप में भी देखा जाता रहा है। मैनेजर पांडेय ने लिखा है, ''समाजशास्त्र में 'सामाजिक' की जो धारणा है वह समाज में क्रियाशील संगठनों, संस्थाओं, संबंधों और व्यवहारों पर निर्भर है। वह समाज की वास्तविकताओं के अमूर्तन का सैद्धांतिक सार है। उसमें समाज से स्वतंत्र व्यक्तियों की सत्ता का कोई विशेष महत्व नहीं होता। ऐसा व्यक्ति असामाजिक माना जाता है।''[1] कुँवर नारायण समाजशास्त्र की इस धारणा के विपरीत खड़े होते हैं और समाज की महत्ता के साथ व्यक्ति अस्मिता को भी प्रतिष्ठित करते हैं। साथ ही 'वैयक्तिक' और 'सामाजिक' के बीच प्रतिद्वंद्वी संबंध के बजाय, सहयोगी और पूरक संबंध की बात करते हैं। उन्हीं के शब्दों में ''निजी और सामाजिक प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं। एक-दूसरे के पूरक हैं न कि एक दूसरे के दुश्मन।''[2] कुँवर नारायण की दृष्टि समग्रता की है। इसलिए बहु आयामी है न कि एक आयामी। इस प्रकार उनकी दृष्टि में वैयक्तिकता का भी उतना ही महत्व है जितना सामाजिकता का। खासकर कविता और कला के संदर्भ में 'वैयक्तिकता' और 'सामाजिकता' के संतुलन पर जोर देते हुए वे कहते हैं, ''कला को 'निजी' और 'सामाजिक' में विभाजित करना वैसा ही है जैसे जीवन को। हम एक साथ 'निजी' और 'सामाजिक' होते हैं - इसमें कोई अंतर्विरोध नहीं।''[3] स्पष्ट है कि कुँवर नारायण की समाज-दृष्टि में 'व्यक्ति' और 'समाज' के विरेधी तत्वों के बजाय पूरक तत्वों का महत्व अधिक है।

कुँवर नारायण दो तरह के संसार की बात करते हैं। हर व्यक्ति का अपना संसार और हम सबका मिलकर एक दूसरे के लिए बनाया गया संसार। यानी व्यक्ति और समाज। जब व्यक्ति समाज में प्रवेश करता है, तो उसे कुछ सामाजिक नियम मानने पड़ते हैं। अर्थात् अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर कुछ नियंत्रण करना पड़ता है, तभी व्यक्ति और समाज के बीच स्वस्थ संबंध बन पाता है। उनका मानना है कि व्यक्ति पर समाज कुछ थोपे नहीं। अत्यधिक दबाव से व्यक्ति की संभावनाओं का विकास रुक जाता है। व्यक्ति नियमों में बंधा मशीन बनकर रह जाता है। उनकी रचनात्मकता का क्षरण हो जाता है। कुँवर नारायण इस रचनात्मकता को बचाने के लिए व्यक्ति-स्वातंत्र्य की बात करते हैं। व्यक्ति-स्वांतत्र्य को रचनात्मकता की अनिवार्य शर्त मानते हैं। उन्हीं के शब्दों में - ''अपनी दुनिया से निकलकर जब हम बाहर की दुनिया में आते हैं, तो हमारे व्यक्तित्व का एक सूक्ष्म विघटन होता है। और हम अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर कुछ ऐसे नियंत्रणों को स्वीकार करते हैं कि हमारा अपना संसार दूसरों के संसारों से संघर्ष में न आए; मानवीय मूल्यों की रचना के लिए कुछ सामाजिक नियमों का मानना अनिवार्य हो जाता है, लेकिन ये नियम, चाहे समाज के हों चाहे राज्य के, इस सीमा तक मान्य नहीं हो सकते कि व्यक्ति की उचित स्वतंत्रता में बाधक हो जाएँ। वे सामाजिक मूल्य कोई माने नहीं रखते जो समाज के नाम पर व्यक्ति के